# 101 इल्मे ग़ैब और रसूल सल्ल0

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफें अल्लाह तआला के लिए हैं, जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं।

अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल0 पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि पर

व बअद!

उम्मते मुस्लिमा के एक गिरोह का यह अकीदा है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 आलिमुल ग़ैब हैं। कायनात में कोई चीज़ आप सल्ल0 से पोशीदा नहीं, उन्हें हर चीज़ व हर बात का इल्म है।

**इस फोल्डर में हम अल्लाह के रसूल सल्ल0 के तीन ज़मानों (1) नबुवत से पहले (2) नबुवत मिलने के बाद और (3) आप सल्ल0 की वफ़ात के बाद का ज़िक्र करेंगे और जानेंगे कि इस बारे में 'कुरआन व हदीस' हमें क्या बतलाते हैं?**

### (1) नबुवत से पहले का ज़माना

(1) इर्शादे बारी तआला है "हमने अपने हुक्म से एक रूह तेरी तरफ भेजी तुझको यह भी मालूम नहीं था कि किताब (कुरआन) क्या चीज़ है? और न ईमान के बारे में पता था।" **(सूरह शूरा–आयत–52)**

(2) ऐ नबी सल्ल0! आप पश्चिमी तरफ नहीं थे, जब हमने मूसा (अलैहि0) को हुक्म भेजा और न इस वाकिए को देखने वाले थे। हमने बहुत सी नस्लें पैदा की, फिर उन पर एक लम्बा अरसा गुज़रा और तू (ऐ नबी सल्ल0) मदयन वालों में नहीं रहता था कि उन्हें हमारी आयतें सुनाता मगर हम रसूल भेजते रहे और तू (ऐ नबी सल्ल0) 'तूर' के करीब न था, जब हमने आवाज़ दी मगर यह तेरे रब का इनाम है ताकि उन लोगों को डराए, जिनके पास तुझ से पहले कोई डराने वाला नहीं आया।
**(सूरह क़सस–आयत–44 से 46)**

(3) "और तुम्हें (ऐ नबी सल्ल0) उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी, मगर तुम्हारे रब ने मेहरबानी की।"
**(क़सस–आयत–86)**

(4) "यह ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम आपकी तरफ वहय कर रहे हैं, और तुम उन के पास नहीं थे जब वह कुरआ डाल रहे थे कि मरयम का कफील किसे बनाया जाए और तुम उस वक़्त भी मौजूद नहीं थे, जब वोह आपस में झगड़ रहे थे।" **(आले इमरान–आयत–44)**

(5) "ऐ नबी सल्ल0 यह सब ग़ैब की ख़बरें हैं जो 'वहय' के जरिये हम आपको बता रहे हैं। तुम उस वक़्त मौजूद नहीं थे जब युसुफ (अलैहि0) के भाईयों ने (उन्हें ख़त्म करने का) फैसला किया था।" **(युसुफ – आयत –102)**

### (2) ज़माना ए नबुवत

यानि नबी बनाए जाने से लेकर दुनिया से रूख़सत होने तक का ज़माना इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ने गुज़रे ज़मानों, कब्र व बरज़ख़ के हालात पुल सिरात व मैदाने मेहशर, जन्नत व जहन्नम की कैफियत वग़ैरह के बारे में बहुत

सा इल्म जो आप सल्ल0 की शायाने शान था आप सल्ल0 को अता किया मगर यह सही नहीं कि यह इल्म पाकर नबी सल्ल0 'आलिमुल ग़ैब' हो गये। क्योंकि इर्शादे बारी है "अल्लाह के सिवा आसमानों व ज़मीन में कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता और उन्हें इसकी भी ख़बर नहीं कि वोह कब उठाये जाएंगे?" (नम्ल–आयत–65)

**कुरआन व हदीसे रसूल सल्ल0 से हवाला जात–**

(1) 'वाकिया इफ्क' यानि आएशा रजि.पर बदकारी के इल्ज़ाम का मामला जिसकी हकीकत का इल्म 'वहय' आने से पहले रसूल सल्ल0 को न हुआ। (नूर–आयत–16 से 26 – बुख़ारी–4141)

(2) 'शहद का वाकिया' जिसमे आप सल्ल0 की दो बीवियों ने मिलकर प्लान बनाया। जिसके नतीजे में आप सल्ल0 ने शहद को अपने आप पर हराम कर लिया। बाद में अल्लाह ने आप सल्ल0 को सारी बात बताई। **(तहरीम–आयत–1 से 4 – बुख़ारी – 4912)**

(3) अल्लाह के सिवाए कोई नहीं जानता कि उसे उठाया कब जाएगा। **(नम्ल–आयत–65)**

(4) 'पांच ग़ैब' अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। **(लुक़मान–आयत–34)**

(5) कयामत कब आएगी? आप सल्ल0 को मालूम न था।
**(आराफ़–आयत–187– ताहा–15 – अहज़ाब–63 – शूरा–17)**

(6) अल्लाह के लश्करों को अल्लाह के सिवाए कोई नहीं जानता। **(मुदस्सर–आयत–31)**

(7) मदीना में और उसके आस – पास कुछ मुनाफ़िक हैं, आप उनको नहीं जानते, हम जानते हैं। **(तौबा–आयत–101)**

(8) रसूल सल्ल0 का आसमानों पर जाना और जिब्रील अलैहि0 से बार–बार पूछना कि यह कौन है? यह कौन है?
**(मुस्लिम–415 – बुख़ारी–349,4233– इब्ने माजा–1399)**

(9) आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मैंने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी 'बैतुल्लाह' का तवाफ़ कर रहा है। मैंने पूछा कि यह साहब कौन हैं? तो फ़रिश्तों ने बतलाया कि ईसा (अलैहि0) हैं। फिर मैंने एक और शख़्स को देखा कि तवाफ़ कर रहा है तो मैंने फिर पूछा कि यह कौन है? फ़रिश्तों ने बताया कि यह 'दज्जाल' है।" **(बुख़ारी–3439 – 6999 – मुस्लिम–426 – 7362)**

(10) आएशा रजि. ने फ़रमाया कि 'जो शख़्स भी तुमसे यह तीन बातें कहे, वह झूटा है – (1) रसूल सल्ल0 ने अपने रब को देखा
(2) रसूल सल्ल0 ग़ैब (आने वाले कल) की बात जानते थे और
(3) रसूल सल्ल0 ने तब्लीग़े दीन में कोई बात छिपाई थी।'
**(बुख़ारी–4855 – मुस्लिम – 439 – तिर्मिज़ी – 3068)**

(11) दोज़ख में आंकड़े होंगे। उनकी लम्बाई व चौड़ाई को अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। **(मुस्लिम–451 – बुख़ारी–6573)**

(12) एक सफ़र में आएशा रजि. का हार गुम हो गया। रसूल सल्ल0 और सहाबा किराम ठहर गए। अबु बकर रजि. अपनी बेटी आऐशा रजि. पर काफ़ी गुस्सा हुए। बाद में जब वह ऊंट खड़ा किया गया, जिस पर आएशा रजि. बैठी थीं, तो हार उसी के नीचे से मिल गया।
**(मुस्लिम–816 – बुख़ारी–334 – 3672)**

(13) रसूल सल्ल0 ने कुरआन के 70 आलिम सहाबा की एक जमाअत कुरआन सिखाने के लिए भेजी थी, जिन्हें मुश्रिकीन ने शहीद कर डाला। **(मुस्लिम–1545 – बुख़ारी–4095 –1300)**

(14) आएशा रजि. कहती हैं कि एक दिन रसूल सल्ल0 जिस वक्त मेरे पास उस वक्त मेरे पास एक औरत बैठी थी। आप सल्ल0 ने पूछा कि यह कौन है मैंने बताया कि यह फला औरत हैं।
(मुस्लिम–1834 – बुखारी–43 – इब्ने माजा–4238 – नसाई–5050

(15) आएशा रजि. का बयान है कि रसूल सल्ल0 जब बादल का कोई ऐसा टु देखते, जिससे बारिश की उम्मीद होती । तो आप सल्ल0 के चेहरे का रंग ब जाता और फरमाते "मैं नहीं जानता, मुमकिन है यह बादल भी वैसा ही हो जि बारे में कौमें आद ने कहा था कि यह बादल हम पर बारिश करने वाला है, हाल उसमें दर्द नाक अजाब था।" (मुस्लिम–2085 – इब्ने माजा–3891 बुखारी–3206)

(16) एक दफा सूरज गहन हुआ तो रसूल सल्ल0 बहुत घबराए, इस डर से कि व कयामत न कायम हो जाए। **(मुस्लिम–2117 – बुखारी–1059)**

(17) एक सहाबी फौत हो गए, लेकिन रसूल सल्ल0 को इसकी खबर किसी ने न दी। एक दिन आप सल्ल0 ने फरमाया "वह शख्स दिखाई नहीं देता? तो सहा ने अर्ज किया कि उसका तो इन्तेकाल हो गया। आप सल्ल0 ने फरमाया फिर तुम मुझे क्यों नहीं बताया? चलो मुझे उसकी कब्र दिखा दो।" **(मुस्लिम–2215 बुखारी–458)**

(18) एक रात अबुजर गफारी रजि. ने देखा कि रसूल सल्ल0 अकेले चले जा र हैं तो वह आप सल्ल0 के पीछे हो लिये। जब आप सल्ल0 को मेहसूस हुआ कि को आ रहा है, तो पूछा कि कौन है? उन्होंने बतलाया कि मैं अबूजर।" **(मुस्लिम–230 – बुखारी–6443)**

(19) दो औरतें रसूल सल्ल0 के दरवाजे पर आई। उन्होंने बिलाल रजि. से कह कि हमारे लिए यह मसअला रसूल सल्ल0 से मालूम करें और हमारा नाम न लें बिलाल रजि. अन्दर गए और अर्ज किया कि दो औरतें यह मसअला मालूम करती हैं तो आप सल्ल0 ने कहा कि यह दो औरते कौन हैं? उन्होंने बताया कि जैनब ना की हैं। तो आप सल्ल0 ने फरमाया "कौन सी जैनब?"
**(मुस्लिम–2318 – बुखारी – 1466 – इब्ने माजा–1834)**

(20) रसूल सल्ल0 ने फरमाया "मैं अपने घर जाता हूँ। वहां मुझे मेरे बिस्तर पर खजूर पड़ी मिलती है। मैं उसे खाने के लिए उठा लेता हूँ। लेकिन फिर यह डर होता है कि कहीं यह सदके की न हो? तो मैं उसे फैंक देता हूँ। **(मुस्लिम–2470 – बुखारी–2432)**

(21) रसूल सल्ल0 की खिदमत में कोई खाने की चीज लाई जाती तो आप सल्ल0 मालूम करते कि यह तोहफा है या सदका?
**(मुस्लिम–2491 – बुखारी–2576)**

(22) हज के मौके पर रसूल सल्ल0 ने सहाबा किराम रजि. से फरमाया "तुम हलाल हो जाओ (यानि एहराम खोल दो) अगर वह बात मुझे पहले मालूम हो जाती, जो बाद में हुई तो मैं कुर्बानी का जानवर साथ न लाता।" **(मुस्लिम–2931–बुखारी–1568)**

(23) 'फत्ह मक्का' के दिन एक आदमी ने आकर खबर दी कि इब्ने खतल गिलाफे कअबा के पर्दों से लटक रहा है, तो आप सल्ल0 ने फरमाया "उसे कत्ल कर दो।"
**(मुस्लिम–3308 – बुखारी–3044)**

(24) रसूल सल्ल0 ने अब्दुर्रहमान बिन औफ रजि पर जर्दी का निशान देखा तो पूछा कि यह क्या है? उन्होंने बतलाया कि मैंने निकाह किया है।
**(मुस्लिम–3494–बुखारी–5155)**

(25) सहाबा रजि ने कैदी औरतों (लौंडियों) से 'अजल' किया। फिर इसका हुक्म

रसूल सल्ल0 से मालूम किया तो आप सल्ल0 ने फरमाया "क्या तुम वाकई ऐसा करते हो? क्या तुम वाकई ऐसा करते हो? क्या तुम वाकई ऐसा करते हो? (मुस्लिम–3546–बुखारी–5210)

(26) रसूल सल्ल0 आएशा रज़ि के घर आए तो वहां एक साहब को बैठे हुए देखा पूछा आएशा यह कौन हैं? तो उन्होंने बताया कि यह मेरा रजाई (दूध शरीक)भाई है।" (मुस्लिम–3606 –बुखारी–2647)

(27) जाबिर रज़ि का बयान है कि एक दफा मैं बीमार पड़ा तो रसूल सल्ल0 और अबुबकर रज़ि दोनों पैदल चलकर मेरी अयादत को आए। मैंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0 मैं। अपने माल में क्या करूं? आप सल्ल0 ने मुझे कोई जवाब नहीं दिया। यहां तक कि मीरास की आयत (निसा–11) नाज़िल हुई। (मुस्लिम–4146 – बुखारी –4577)

(28) नौमान बिन बशीर रजि. बयान करते हैं कि उनके वालिद उन्हें नबी सल्ल0 के पास लेकर गए और अर्ज किया कि मैंने अपने इस बेटे को एक गुलाम बतौर हिबा (तो हफा) दिया है । आप सल्ल0 ने मालूम किया कि क्या ऐसा ही गुलाम दूसरे बेटो को भी दिया है? उन्होंने बताया कि नहीं तो आप सल्ल0 ने फरमाया (इससे भी) वापिस ले लो।" (मुस्लिम–4177 – बुखारी–2586)

(29) जंगे बदर के दिन रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया कि "कौन देख कर आएगा कि अबु जहल का क्या हुआ? इब्ने मसऊद रजि. मालूम करने गए तो देखा कि अफ़रा के दो लड़कों ने उसे कत्ल कर डाला है और उसका जिस्म ठन्डा पड़ा है। (मुस्लिम–4662 – बुखारी 3962)

(30) उम्मुल मोमिनीन मैमूना रजि. ने भुना हुआ सांडा आप सल्ल0 को खाने के लिए पेश किया। इससे पहले कि आप सल्ल0 खाना शुरू करते आपको बताया गया कि यह सांडा है आप सल्ल0 ने अपना हाथ सांडे से हटा लिया। खालिद रजि. ने पूछा कि क्या यह हराम है? आप सल्ल0 ने फरमाया नहीं (मुस्लिम–5035 – बुखारी–5537)

(31) एक यहुदी औरत रसूल सल्ल0 की ख़िदमत में बकरी का गोश्त लाई जिसमें जहर मिला था। आप सल्ल0 ने उसमें से कुछ खाया बाद में उस औरत ने इक़रार किया कि इसमें ज़हर मिलाया था। आप सल्ल0 ने उस जहर का असर सारी जिन्दगी अपने तालू में मेहसूस किया। (मुस्लिम–5705 – बुख़ारी –2617 – अबुदाऊद –4508)

(32) एक यहूदी रसूल सल्ल0 के पास हाज़िर हुआ और शिकायत की कि आप के साथियों में से एक ने मुझे तमांचा मारा है। आप सल्ल0 ने पूछा कि किसने? (मुस्लिम – 6153 –बुखारी – 2412 –अबुदाऊद–4671)

(33) रसुल सल्ल0 ने मूसा अलैहि और ख़िज्र अलैहि का लम्बा किस्सा बयान करते हुए फरमाया "अल्लाह मूसा (अलैहि0) पर रहम फ़रमाए। अगर वह कुछ देर और सब्र करते तो उन दोनों के और वाकिआत हमारे इल्म में आते (मुस्लिम–6163 – बुखारी–122)

(34) रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया मेअराज की रात मैं जन्नत में गया। वहां मैंने एक महल देखा तो पूछा कि यह किसके लिए है? फरिश्तों ने बतलाया कि यह उमर रज़ि के लिए है।
(मुस्लिम – 6198 – बुख़ारी – 5226)

(35) गज़वा ए ख़न्दक के दिन रसल सल्ल0 ने फ़रमाया "दुश्मन के लश्कर की ख़बर मेरे पास कौन लेकर आएगा? तो ज़ुबैर रजि. ने कहा कि मैं (मुस्लिम–6243 – बुख़ारी–2846)

(36) रसूल सल्ल0 ने अपनी बेटी उम्मे कुलसूम रजि. की वफात पर अश्क भरी

आंखों से सहाबा रजि. से पूछा कि "लोगों तुम में कोई ऐसा भी है जो आज रात औरत के पास न गया हो? अबु तल्हा रजि. ने कहा कि मैं तो आप सल्ल0 ने उन्हें कब्र में उतरने का हुक्म दिया।
(बुखारी–1342)
(37) रसूल सल्ल0 ने फातिमा रजि. के आंगन में बैठ कर पूछा कि वह बच्चा (हसन रजि.) कहां है?(मुस्लिम–6257 – बुख़ारी – 5884)
(38) एक शख़्स जो रात में दफ़्न कर दिया गया था। आप सल्ल0 ने उस (ताजा) क़ब्र के पास खड़े हो कर पूछा कि यह किसकी क़ब्र है?(बुखारी–1336)
(39) उसमान बिन मजऊन रजि. के जनाज़े के पास खड़े हो कर आप सल्ल0 ने फ़रमाया "अल्लाह की कसम" मैं अल्लाह का रसूल हूँ मगर मैं यह नहीं जानता कि मेरे साथ क्या मामला होगा? और तुम्हारा क्या हाल होगा? (बुखारी–7018–1243)
(40) रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया "कयामत के दिन मैं अर्श के नीचे आऊंगा और अल्लाह के हुज़ूर सज्दे में गिर पड़ूंगा फिर अल्लाह की ऐसी हम्द व सना बयान करूंगा कि आज मैं उस पर कुदरत नहीं रखता। उसी मौके पर वह हम्द मुझे अल्लाह सिखाएगा।"(मुस्लिम–475 – बुख़ारी –6565)
(41) एक वफ्द आप सल्ल0 की खिदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्ल0 ने पूछा यह कहां का वफ्द और कौन सी जमाअत है? वफ्द वालों ने बताया खानदाने रबीआ। (मुस्लिम–115 – बुख़ारी–53)
(42) आप सल्ल0 ने इरादा किया (अपनी बीवी) हज़रते सफिया रजि0 से जो मर्द को अपनी बीवी से होता है, उन्होंने बतलाया कि मैं 'हैज़' से हूँ।(मुस्लिम–3227)
(43) "ग़ैब की कुन्जियां उसी (अल्लाह) के पास है, जिनको उसके सिवाए कोई नहीं जानता। ज़मीन जंगल और समन्दर की सब चीज़ो का इल्म उसी के पास है कोई पत्ता भी झड़ता है तो उसके इल्म में होता है।" (अनआम–आयत–59)
(44) (ऐ मुहम्मद सल्ल0) यह किस्से ग़ैब की ख़बरों में से है। हम जिसकी वहय तुम्हारी तरफ भेज रहे हैं। इससे पहले न तुम इन बातों को जानते थे और न तुम्हारी कौमे जानती थी।" (हूद–आयत–49)
(45) "इस कुरआन के नाज़िल होने से पहले इस वाकिए की आपको ख़बर नहीं थी।(युसुफ–आयत–03)

## फौत होने के बाद का ज़माना

"जिस दिन अल्लाह तमाम रसूलों को जमा करेगा। तब इर्शाद फरमाएगा कि तुम को क्या जवाब दिया गया। तब वह अर्ज़ करेंगे कि हमें मालूम नहीं। बेशक तू और सिर्फ तू ही ग़ैब (छिपी हुई बातों) का जानने वाला है।"(माइदा–आयत–109)
(1) एक औरत अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आई। आप सल्ल0 ने उससे कहा कि फिर (कभी) आना। वह बोली कि मैं आऊँ और आप सल्ल0 न मिलें (यानि आप सल्ल0 की वफात हो जाए) तो? आप सल्ल0 ने फरमाया "अगर मैं न हुआ तो अबु बकर (रजि.) के पास आना।" (बुख़ारी–7220)
(2) हजरत उमर रजि. के ज़माने में जब कहत (सूखा) पड़ता तो वह अल्लाह के रसूल सल्ल0 के चचा हज़रत अब्बास रजि. के ज़रिये दुआ करते और कहते कि "या अल्लाह। हम पहले तेरे पास नबी सल्ल0 का वसीला लाया करते थे और तू पानी बरसाता था। अब (जब वह फोत हो गए तो) उनके चचा का वसीला लाए हैं, हम पर बारिश बरसा।" (बुखारी'1010)
(3) "मैं कयामत के दिन अपने हौ ज़े कौसर पर हूंगा। जो शख़्स वहां आएगा, वह उसमें से पीयेगा और जो उसमें से पी लेगा, उसे फिर प्यास नहीं लगेगी। कुछ लोग हौज़ पर ऐसे आएंगे, जिन्हें मैं पहचानता हूँगा और वोह मुझे। फिर मुझ में और उनमें आड़ कर दी जाएगी मैं कहूँगा कि यह तो मेरे उम्मती हैं। इर्शाद होगा कि तुम नहीं

जानते, इन्होंने तुम्हारे बाद क्या–क्या नई बातें (दीन में) निकाली। तब मैं कहूँगा जिसने मेरे बाद दीन बदल डाला, वोह दूर हों, दूर हों।" **(बुख़ारी–6583)** (यानि आज अल्लाह के रसूल सल्ल0 नहीं जानते है कि इस उम्मत के कौन–कौन लोग दीन में रद्दो बदल कर रहे हैं।)

(4) कयामत के दिन मेरी उम्मत के कुछ लोग लाए जाएंगे फरिश्ते उन्हें पकड़ कर बाई तरफ़ वालों (जहन्नमियों) में ले जाएंगे। मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब! यह तो मेरे उम्मती हैं। इर्शाद होगा कि तुम नहीं जानते कि इन्होंने तुम्हारे बाद क्या–क्या किया? उस वक़्त मैं वही कहूंगा जो अल्लाह के नेक बन्दे ईसा (अलैहि0) ने कहा "मैं जब तक इन लोगों में रहा, इनका हाल देखता रहा। इर्शाद होगा कि यह लोग अपनी एड़ियों के बल इस्लाम से फिरे रहे, जब तू (सल्ल0) इनसे जुदा हुआ।" **(मुस्लिम–7201 – बुखारी–3349)**

(5) फिक्ह हनफ़ी की मशहूर किताबों में यह मसअला लिखा है कि "जिस शख़्स ने किसी औरत से निकाह किया और यह कहा कि हम अल्लाह को और उसके रसूल सल्ल0 को गवाह बनाते हैं, तो वह काफ़िर हो जाएगा और इसकी वजह यह लिखी है कि उस शख़्स ने रसूल सल्ल0 को 'आलिमुल गैब' जाना। हालांकि 'इल्मे ग़ैब' अल्लाह के लिए ख़ास है।" **(दुर्रे मुख़्तार–जिल्द 2 सफ़ा–14)**

"जो कोई यह दावा करे कि रसूल सल्ल0 इल्मे ग़ैब जानते हैं, तो वह काफिर है।" अल्लाह के इस फ़रमान की वजह से "आसमानों व ज़मीन में कोई ग़ैब की बात नहीं जानता, मगर अल्लाह" **(अनआम–आयत–65(मुक़दमा हिदाया–उर्दू–सफ़ा–59))** मुल्ला अली कारी हनफी रह0 फरमाते हैं "जो लोग नबी सल्ल0 को ग़ैब दान जानते हैं, हनफी इमामों ने उनके कुफ्र की तसरीह की है।"

इसके अलावा यह कि (1) कयामत कब आएगी?
(2) बारिश (कब, कहां और कितनी होगी?) सिर्फ अल्लाह जानता है।
(3) मां के पेट में बच्चे की हालत को सिर्फ अल्लाह जानता है।
(4) कोई जानदार नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा? और
(5) कोई यह भी नहीं जानता कि उसे कब और कहां मौत आएगी। मगर अल्लाह को इन बातों का इल्म है।" **(लुकमान –आयत–34)**

इतना ही नहीं अल्लाह तआला ने रसूल सल्ल0 से फरमाया कि "आप कह दीजिए कि जो अल्लाह चाहता है वही हो कर रहता है। मैं तो अपने नफ़े–नुक्सान का भी मालिक नहीं। अगर मुझे ग़ैब (छिपी हुई बातों) का इल्म होता तो मैं सब नफ़ा समेट लेता और मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचती।" **(आराफ़ –आयत–188)**

कुरआन व हदीस के इन वाज़ेह दलाइल और खुद फिक्ह हनफी की रू से यह साबित हुआ कि 'इल्मे ग़ैब' अल्लाह के सिवाए किसी को नहीं और अल्लाह के रसूल सल्ल0 को नबुवत से पहले, नबुवत मिलने के बाद ग़ैब का इल्म नहीं था और न अब दुनिया से रूख़सत हो जाने के बाद है।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमारी ख़ताओं व गुनाहों को दर गुज़र फ़रमाए। बुरे साथियों व बुरे उलैमा के शर से बचाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9214838839,9887239649